

हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा – एक आलोचनात्मक दृष्टि

डॉ. जे सेन्दामरै

असोसिएट प्रोफेसरे, हिन्दी विभाग, सीतालक्ष्मी रामस्वामी महाविद्यालय तिरुच्चि, तमिलनाडु, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12236>

सारांश

आत्मकथा में रचनाकार का आत्मतत्त्व जितना गहन, विस्तीर्ण, रागपरक एवं कमबद्ध होता है, उतना और किसी विधा में नहीं। रचनात्मक आत्मालोचना का नाम ही आत्मकथा है। बच्चन की आत्मकथा ने हिन्दी आत्मकथा को अपनी एक विशिष्ट और निजी पहचान दी है, एक जनरुचिकर गद्य विधा के रूप उसे एक खास नया चेहरा दिया है। बच्चन की आत्मकथा श्रृंखला में इस दृष्टि से हिन्दी आत्मकथा का विश्वस्तरीय चरमोत्कर्ष परिलक्षित होता है। आत्मकथा को पढ़ने से ऐसा लगता है कि राष्ट्रीयता के नाम पर उनमें एकदम जोश उत्पन्न होता है। हिन्दी साहित्य के प्रति उनका योगदान हमेशा अतुलनीय रहेगा।

मूल शब्द: आत्मकथा, हरिवंश राय बच्चन, हिन्दी साहित्य, आत्मतत्त्व

आत्मकथा, हिन्दी गद्य साहित्य की अपेक्षाकृत नवीन एवं विकासशील विधा है। आत्मकथा में रचनाकार का आत्मतत्त्व गहन, विस्तीर्ण, रागपरक एवं कमबद्ध होता है, उतना और किसी विधा में नहीं। आत्मकथा में स्मृति के माध्यम से जीवन का पुनर्निर्माण किया जाता है। गार्सिया मार्वेज का कथन है – आत्मकथा में जीवन वह नहीं होता जिसे लेखक जी चुका होता है, बल्कि वह होता है, जिसे वह याद करता है और याद करने की प्रक्रिया भी कहने या लिखने की आकांक्षा के अनुरूप होती है।

हरिवंशराय बच्चन आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक मूर्धन्य एवं यशस्वी साहित्यकार है। बच्चन सफल कवि है। किन्तु साथ ही आत्मकथा साहित्य में उनका स्थान बेजोड़ एवं शीर्ष पर रहा है। बच्चन ने आत्मचित्रण को तत्कालीन युगपरिवेश व आधुनिक युग परिवेश से जोड़ा है, स्वाभाविक है कि पाठक की वर्तमान संदर्भ में उसे पढ़ने की रुचि एवं उत्सुकता जाग उठती है। अपनी समकालीन युग परिस्थितियों, अपने रचनात्मक जीवन से निःसृत अनुभूति अनुप्रेरित जीवन वृत्तों, क्षणों का एवं अतीत का एक अनोखा व अपूर्व एलब है यह आत्मकथा साहित्य।

क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड का निर्माण फिर, बसेरे से दूर और दशद्वार से सोपान तक को पढ़ने से ज्ञात हो जाता है कि उनकी स्वाभाविक रुचि गद्य की और प्रदत्त थी। लेकिन परिस्थितियों ने शायद उन्हें कवि बने रहने का भी वरदान दिया था। और वही उनके जीवन की अनिवार्य रुचि बन गयी थी। बच्चन की आत्मकथा उनके आत्ममंथन का परिणाम है उसके अंतर में निरंतर उठती स्मृतियों का चित्रण है। उनकी आत्मकथा की

प्रशंसा करते धर्मवीर भारती कहते हैं

हिन्दी में अपने बारे में सब कुछ इतनी बेबाकी और साहस और सद्भावना से कह देना यह पहली बार हुआ है।

बच्चन का आत्मकथा अत्यधिक सजग और सफल हो सका है। इससे प्रेरित होकर पाठक का जीवन प्रेरणादायक होकर आगे बढ़ सकने में संभव है। आत्मकथा सोउद्देश्य होती है। मनुष्य जीवन के हर कार्य करने के पीछे कोई न कोई उद्देश्य निहित रहता है। अपने को तथा अपने जीवन की घटनाओं को महत्वपूर्ण मानने की प्रवृत्ति ही मानव को आत्मचरित या आत्मकथा लिखने को प्रवृत्त करती है। लेकिन यह प्रवृत्ति भारतीय जीवन पद्धति में कम स्थान पा सकी। बच्चन का आत्मकथा चित्रण उनके मानस मंथन का परिणाम है। पहले संस्करण क्या भूलूँ क्या याद करूँ की

भूमिका में वे स्वयं लिखते हैं कि – जीवन की जिस सीढ़ी पर मैं हूँ उस पर अतीत का स्मरण शायद स्वाभाविक होता है। मेरे पास औरों का मन जानने के लिए भी केवल अपने मन का पैमाना है।

क्या भूलूँ क्या याद करूँ

इस आत्मकथा के प्रारम्भिक 20 पृष्ठों तक कायस्थ जाति के गुण, उत्पत्ति तथा उसकी ब्राह्मण जाति से तुलना की है। आत्मकथा में बच्चन ने अपने पीढ़ी परम्परा से लेकर उनकी पत्नी श्यामा की रुग्णावस्था तक का वर्णन किया है। श्यामा ने उनके जीवन को उनकी भावुकता को दिशा दे दी थी। लेखक श्यामा को सरल हृदय को सजाने की कोशिश की है—

उसके उस सरलपन से
मैंने था हृदय सजाया,
नित मधुर मधुर गीतों से
उसका उर था उकसाया

श्यामा ने हर परिस्थिति में जो त्यागपूर्ण सहयोग दिया, उसे वे भूल नहीं सकते। साथ ही बच्चन ने अपने बाबा, परबाबा, पिता, माता, गुरु, चाचा के साथ बिताये दिनों का वर्णन और अपनी कविताओं के संकलन मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश में अपनी आर्थिक असमर्थता व विवशता, वशैक्षणिक जीवन आदि का वर्णन किया है। कवि ने अपनी कविताओं को जीवन की अनुभूति बताकर उसे जीवनवाद की संज्ञा दी।

उन्होंने कहा ... मेरी कविता जीवनपद थी, जिए भोगे जीवन की सीधी अभिव्यक्ति और जीने भोगने में आए परिवर्तन के अनुरूप परिवर्तित।

बच्चन जी के कविहृदय ने कभी अपने विरोधियों की चिंता नहीं की, उनके हृदय के उद्गार इस तरह फूट पड़ते थे

हूँ आज प्रवाहित मैं ऐसे,
जैसे कवि के हृदयोद्गार,
तुम रोक नहीं सकते मुझको,
कर नहीं सकोगे मुझे पार।

बच्चन ने अपने लडकपन एवं जवानी की कठिनता को उन्होंने इन पंक्तियों में कहा है

उस लडकपन औ जवानी के शुरु की
उलझनों को क्या बताऊँ,
भूलने का नाम वे लेती नहीं है,

मैं उन्हें कितना भुलाऊँ।

क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं बच्चन जी द्वारा अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि व जन्म के साथ साथ इलाहबाद चक मोहल्ला, जीरो रोड के समाज का चित्रण और उसके साहित्य से प्रभावित वातावरण के अनुकूल ढलने का भी वर्णन है। साथ ही अपने साहित्य पथ का भी सूक्ष्मता से वर्णन किया है।

नीड़ का निर्माण फिर

बच्चनजी की आत्मकथा का दूसरा खण्ड नीड़ का निर्माण फिर है। इसमें श्यामा की मृत्यु के बाद काफी अकेलेपन से संघर्ष करने के बाद फिर से उनके जीवन का निर्माण तेजी से विवाहद्ध हुआ था। बच्चनजी की आत्मकथा नीड़ का निर्माण फिर में सन् 1936 से 1941 तक की अपनी जीवन कहानी को प्रस्तुत किया है। इस आत्मकथा में लेखक भावुक के स्थान पर विचारक अधिक हो गये हैं।

प्रभु क्या तू अपने सेवक से असंतुष्ट है?

मैं कितना कम कर पाया हूँ,

ज्यादा कर सकना मेरे बस के बाहर था—

मैं जीवन संघर्ष में धंसा,

मैंने मुसीबतें झेली हैं,

मैंने भूले की है,

मैंने सृजन किया है।

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि बच्चन ने अपने जीवन संघर्ष में अनेक भूलें की, अनेक बार धंसे पर फिर भी साहित्य सृजन जैसे उत्कृष्ट कार्य कर वे हिन्दी साहित्य जगत के लिए एक महान कलाकार बन गए।

श्यामा के मृत्यु के बाद बच्चन अपना सम्पूर्ण जीवन, काव्य और साहित्य सृजन में लगा देते हैं। इसी बीच में बच्चन ने दिनकर, निराला, पंत, शमशेर आदि के परिचय का वर्णन किया है। बच्चन के लिए बरेली कवि सम्मेलन में जाना उनके नीड़ का निर्माण फिर था। वे स्वयं लिखते हैं—

जब मैं बरेली गया था तब मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि इसी बरेली में पाँच वर्ष बाद तेजी में मेरी सगाई होगी और नीड़ का निर्माण फिर होगा।

प्रवास की डायरी

1952 से 1954 तक का काल बच्चन के विशेष महत्व का था, जिसमें बच्चन ने अपने देश, घर, परिवार से दूर सर्वथा एकांकी आत्मनिर्भर अपरिचितों के मध्य, इंग्लैंड और आयरलैंड में प्रवास किया। तथा केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की उपाधि ली। प्रवास की डायरी बच्चन की डायरी विधा है। प्रत्येक दिन कुछ न कुछ घटनाओं को लेकर आता है। बच्चन जितने दिन इंग्लैंड रहे, वहाँ की दिनचर्या के विशेष क्षणों को उन्होंने प्रवास की डायरी में कैद कर लिया है। इसमें लेखक—एक कवि, एक विचारक, एक पति, एक पिता, एक शोध प्रज्ञ आदि अनेक रूपों में एक साथ पाठकों के समक्ष उपस्थित होने में सफल हुए हैं।

लेखक ने शोध कार्य की कठिनाई, स्वच्छन्दतावाद तथा तत्सम्बन्धिनी कविता, रहस्यवाद, आधुनिक कविता आदि पर भी लेखक ने विचार रखा है।

प्रवास की डायरी के विषय में दिनकर के शब्दों में —उनकी प्रवास की डायरी हिन्दी की अनुठी पुस्तक है। जो व्यापक और गंभीर है। यह पुस्तक बच्चन की साहित्यिक प्रतिभा का एक और सशक्त प्रमाण है। इसे पढ़ते समय प्रसन्नता का अनुभव होता है। बच्चन के अनुसार प्रवास की डायरी डायरी लेखन की एक सर्वोत्कृष्ट कृति है।

बसेरे से दूर

बसेरे से दूर बच्चन की आत्मकथा का तीसरा खण्ड है। यह लेखक की उस समय की कहानी को सुनाता है, जो उन्होंने देश, नगर, घर, परिवार, आदि से दूर रहकर इंग्लैंड केम्ब्रिज में बितायी थी। केम्ब्रिज से पी.एच.डी की उपाधि लेकर स्वदेश लौटे। वही उनकी मुलाकात कवि ईट्स से हुई। केम्ब्रिज से भारत तक की यात्रा का वर्णन किया है। जीवन के कई संघर्षों का वर्णन भी किया है। नेहरू से उनकी मुलाकात ने जीवन दशा ही बदल डाली। विदेश मंत्रालय दिल्ली में नौकरी से उनके जीवन में एक नया मोड़ आया। लेखन से विदा लेना चाहा। विदा की अनुभूति उनके जीवन का मुख्य अंग रही है, वे कहते हैं

अनुभूति के क्षण घड़ी की सुई से नहीं नपते हैं।

यह विदा का नाम होता ही बुरा है,

डूबने लगती तबीयत।

दशद्वार से सोपान तक

दशद्वार से सोपान तक बच्चन की आत्मकथा साहित्य का चौथा खण्ड है। यह अन्य तीन भागों की अपेक्षा अधिक विस्तृत एवं बहुआयामी है। सुविधा की दृष्टि से बच्चनजी ने पुस्तक के दो भाग कर दिये हैं

पहला पड़ाव, जिसमें 1957 से 1971 तक की घटनाओं का वर्णन है, और दूसरा पड़ाव जिसमें 1971 से 1983 तक की घटनाएँ चित्रित हैं।

इस आत्मकथा के पहले पड़ाव के अन्तर्गत बच्चन जी ने अपने जीवन के हिन्दी विशेषज्ञ रूप का चित्रण किया है। मंत्रालय के कार्यभार और चुनौतियाँ, महानगर में मकान की समस्याएँ का विस्तृत वर्णन किया है।

उन्होंने कई समस्याओं का जिक्र कहीं नहीं किया।

वे कहते हैं कि — कुछ बातें न पूछने की होती हैं, न बताने की होती हैं, सिर्फ समझने की होती हैं, और समझकर चुप रहने की होती हैं।

दिल्ली आकर बच्चनजी का संबंध नेहरू परिवार से बहुत निकट हो गया। उन्होंने नेहरू को कभी शिकायत का मौका नहीं दिया। बच्चन का जीवन दर्शन है

अपने मन का हो जाय तो अच्छा,

न हो जाय जो ज्यादा अच्छा।

बच्चन ने कई अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में भाग लिया। उन्होंने विदेश मंत्रालय में दस बरस कार्य किया। उन्हें केन्द्रीय हिन्दी समिति के सचिव का पद संभालने आदेश हुआ। बच्चन का पद्मभूषण से सम्मानित होना, अमिताभ का फिल्मों में प्रवेश होना, उन्होंने 73 में कविता और 77 में गद्य से विधा लेने का चाहा परन्तु न हो सका, 78-79 में प्रतिनिधि श्रेष्ठ कविताएँ लिखना आदि का चित्रण किया है। कवि लिखते हैं

कितनी आई और गई इस मदिरालय में हाला,

टूट चुकी है कितनी अब तक, मादक प्यालों की माला,

कितने साकी अपना अपना काम खत्म कर दूर गए,

कितने पीने वाले आए किन्तु वही है मधुशाला।

लेखक का मानना है कि पठन के साथ चिंतन न चले तो पढ़ना सिर्फ वक्त काटना है।

बच्चन की आत्मकथा सहज, सरल और सुरुचिसम्पन्न है। बच्चन की गद्य शैली कवि की भावुकता, हृदय स्पर्शिता, आत्मकथा की रोचकता आदि के साथ साथ उनका विद्वान और अनुभवी अध्यापक, अंग्रेजी, उर्दू का व्यापक ज्ञान, संस्कृत की पृष्ठभूमि से अवगत होना, अंग्रेजी में शोध आदि सभी की ज्ञानवर्धता, सजीवता एवं अनुभवशीलता के कारण उल्लेखनीय है। बच्चन का साहित्य दर्शन इस बात को दर्शाता है कि बच्चन ने अपनी पुरानी विचारधारा का, मिथकों का साहारा लेकर अधुनातन अर्धघोषित करते हुए ही गद्य साहित्य का विकास किया। बच्चन ने अपने

आत्मकथा साहित्य द्वारा हिन्दी साहित्य में अपना स्थान सुरक्षित किया। हिन्दी साहित्य के प्रति उनका योगदान हमेशा अतुलनीय रहेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कृष्णचन्द्र पंडया — बच्चन व्यक्तित्व एवं कृतित्व, आस्था प्रकाशन, भोपाल, मध्यप्रदेश
2. डॉ.रामचन्द्र तिवारी — हिन्दी गद्य साहित्य,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. डॉ.जीवनप्रकाश जोशी — बच्चन व्यक्तित्व एवं कृतित्व, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद
4. डॉ. अंजु शर्मा — बच्चन का आत्मकथा साहित्य,वाणी प्रकाशन, दिल्ली